IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, July 2026
Impact Factor: 8.2

भारतीय शास्त्रीय संगीत में महिला गायिकाओं के योगदान का विश्लेषण

सोनवणे ऋतुराज राहुल[1] and डॉ. **सौरभ सक्सेना**[2]
[1]शोधार्थी , [2]शोध निर्देशक
संगीत-विभाग
सनराइज विश्वविद्यालय अलवर, राजस्थान

सारांश: *भारतीय शास्त्रीय संगीत भारतीय सांस्कृतिक परंपरा की एक अत्यंत समृद्ध और निरंतर विकसित होने वाली विधा है, जिसमें हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटक संगीत की दो प्रमुख धाराएँ सम्मिलित हैं। इस संगीत-परंपरा के विकास में महिला कलाकारों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है, हालाँकि संगीत के इतिहास-लेखन में उनकी भूमिका को लंबे समय तक पुरुष कलाकारों की तुलना में तेजी से कम महत्व दिया गया। आधुनिक शोध यह संकेत करता है कि महिलाओं ने केवल गायिका के रूप में ही नहीं, बल्कि गुरु, संगीत-शिक्षिका, रचनाकार, शोधकर्ता, सांस्कृतिक प्रतिनिधि और परंपरा की संवाहिका के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विशेष रूप से महिला गायिकाओं ने ख्याल, ठुमरी, दादरा, ध्रुपद, भजन तथा कर्नाटक संगीत की विभिन्न गायन शैलियों को समृद्ध किया।*

मुख्य संकेतक : भारतीय शास्त्रीय संगीत, महिला गायिका, हिन्दुस्तानी संगीत, कर्नाटक संगीत, लैंगिक विमर्श, स्त्री-अस्मिता।

I. प्रस्तावना

भारतीय शास्त्रीय संगीत का विकास अनेक सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परंपराओं के अंतर्संबंध से हुआ है। राग, ताल, स्वर, आलाप, बंदिश, मनोधर्म तथा गुरु-शिष्य परंपरा इसकी प्रमुख विशेषताएं हैं। हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत ने अलग-अलग ऐतिहासिक परिस्थितियों में अपनी विशिष्ट शैलियां विकसित कीं, बावजूद दोनों में मौखिक परंपरा, अनुशासित साधना और गुरु-शिष्य संबंध का विशेष महत्व रहा है। इस व्यापक संगीत-संसार में महिला गायकों की भूमिका कार्यरत रही है।

महिला कलाकारों का इतिहास केवल प्रसिद्ध गायकों की सूची तैयार करने से नहीं समझा जा सकता। इसके लिए यह देखना जरूरी है कि महिलाओं को संगीत सीखना, सार्वजनिक मंच पर प्रस्तुत होने, पेशेवर कलाकार बनने और अपनी कलात्मक स्वतंत्रता विकसित करने के कितने अवसर मिले। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत पर शोध यह बताता है कि संगीत की विभिन्न शैलियों और गायन-तकनीकों को श्रोता तथा कलाकार अक्सर लैंगिक अर्थों में भी ग्रहण करते हैं। अलगबंद-ज़ादेह (2015) ने इसी संदर्भ में "सोनिक परफॉर्मेटिविटी" की अवधारणा के माध्यम से दिखाया कि आवाज और संगीत की प्रस्तुति सामाजिक लैंगिक धारणाओं से प्रभावित हो सकती है। इसलिए महिला गायकों के योगदान का अध्ययन केवल "महिला कलाकारों की उपलब्धियों" का वर्णन नहीं है, बल्कि यह प्रश्न भी उठता है कि संगीत के क्षेत्र में स्त्री की आवाज को किस प्रकार सुना, स्वीकार और मूल्यांकित किया गया।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, July 2026
Impact Factor: 8.2

II. शोध-पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक समीक्षा-पद्धति पर आधारित है। इसमें 2010 से 2023 के मध्य उपलब्ध शोध-पत्रों, संगीत-विषयक अध्ययनों, जर्नल लेखों तथा विश्वसनीय सांस्कृतिक स्रोतों की समीक्षा की गई है। साहित्य का चयन मुख्यतः निम्न विषयों के आधार पर किया गया भारतीय शास्त्रीय संगीत, महिला संगीतकार, हिन्दुस्तानी गायन, कर्नाटक संगीत, लैंगिकता, महिला कलाकारों की पेशागत स्थिति तथा आधुनिक संगीत संस्कृति।

समीक्षा में गुणात्मक विश्लेषण का उपयोग किया गया है। साहित्य से प्राप्त निष्कर्षों को चार प्रमुख आयामों कलात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक और लैंगिक के आधार पर वर्गीकृत किया गया है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत और महिला गायिकाओं की ऐतिहासिक भूमिका

भारतीय संगीत के इतिहास में महिलाओं की उपस्थिति बहुत पुरानी है, लेकिन उनकी भूमिका विभिन्न कालखंडों में अलग-अलग सामाजिक अर्थ ग्रहण करती रही। विशेष रूप से उत्तर भारतीय संगीत के इतिहास में तवायफ परंपरा की महिला कलाकारों का योगदान उल्लेखनीय रहा। अलगबंद-ज़ादेह (2015) के अनुसार, उन्नीसवीं शताब्दी से लेकर भारतीय स्वतंत्रता के बाद तक तवायफ गायकें उत्तर भारतीय संगीत-संस्कृति के महत्वपूर्ण केंद्रों में उपस्थित थे। उन्होंने संगीत, नृत्य और काव्यात्मक प्रस्तुति के माध्यम से सार्वजनिक संगीत संस्कृति को आकार दिया। आधुनिक काल में संगीत के संस्थानीकरण के साथ महिला कलाकारों की सामाजिक पहचान में परिवर्तन आया।

संगीत शिक्षा स्वयंसेवकों, आकाशवाणी, संगीत सम्मेलनों, रिकॉर्डिंग तकनीक और सार्वजनिक मंचों के विस्तार ने महिला कलाकारों को नए अवसर प्रदान किए। साथ ही, यह परिवर्तन विरोधाभास भी था क्योंकि सार्वजनिक मंच पर आने वाली महिलाओं को सामाजिक प्रतिष्ठा, नैतिकता और पारिवारिक मर्यादा से जुड़े प्रश्नों का सामना करना पड़ता था। इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में महिला गायकों का योगदान भारतीय शास्त्रीय संगीत के पेशेवर स्वरूप के निर्माण से भी जुड़ा हुआ है। उनकी प्रस्तुतियों ने शास्त्रीय संगीत को केवल दरबारी या सीमित उत्साही संस्कृति से एचपी व्यापक सार्वजनिक सांस्कृतिक क्षेत्र में स्थापित करने में योगदान दिया।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में महिला गायिकाओं का योगदान

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में महिला गायकों ने ख्याल, ठुमरी, दादरा, टप्पा, भजन और अन्य गायन शैलियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी विशिष्ट आवाज, भाव-अभिव्यक्ति, मींड, गमक, तान, बोल-आलाप और राग-विस्तार ने हिन्दुस्तानी गायकी की सुंदरता परक विविधता को समृद्ध किया।

महिला गायकों की उपलब्धियों का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि उन्होंने केवल स्थापित घरों की शैली को दोहराया नहीं, बल्कि व्यक्तिगत संस्कृतियों के माध्यम से उसमें नए आयाम जोड़े। घराना-परंपरा में कलाकार को एक निश्चित सुव्यवस्थित अनुशासन प्राप्त होता है, बावजूद प्रत्येक कलाकार की व्यक्तिगत गायिका उस परंपरा में विशिष्ट पहचान बनाती है। हिन्दुस्तानी संगीत में विभिन्न संस्कृतियों के गायकों की शैलीगत विविधता पर किए गए वैज्ञानिक संरचनाओं से भी व्यक्तिगत संस्कृतियों और पीढ़ीगत परिवर्तन का महत्व सामने आता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, July 2026 Impact Factor: 8.2

समकालीन महिला कलाकारों में कौशिकी चक्रवर्ती जैसी गायकें परंपरा और नवीनता के संयोजन का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। उनके मंचीय प्रदर्शन में ख्याल की पारंपरिक संरचना के साथ स्वर-विस्तार, ऊर्जा और प्रयोगशीलता दिखाई देती है। दरबार महोत्सव के 2021 प्रदर्शन में भी उनकी पटियाला घराने की गायकी और क्रिएटिव प्रस्तुति को विशेष रूप से त्रिभुज किया गया है। इसी प्रकार अश्विनी भिड़े-देशपांडे ने जयपुर-अतरौली और अन्य संगीत परंपराओं के प्रभावों के साथ अपनी विशिष्ट गायन पहचान विकसित की। उनके 2018 के दरबार महोत्सव प्रदर्शन में ख्याल, भजन तथा राग-आधारित प्रस्तुति की विविधता दिखाई देती है।

कर्नाटक संगीत में महिला गायिकाओं की भूमिका

कर्नाटक संगीत की परंपरा में महिलाओं की उपस्थिति अत्यंत प्रभावशाली रही है। महिला कलाकारों ने कृति, वर्णम, रागलापना, निरवल, काल्पनिकस्वर और भक्ति-संगीत की विविध शैलियों को समृद्ध किया। कर्नाटक संगीत में महिला कलाकार की भूमिका केवल गायन तक सीमित नहीं रही; उन्होंने वाद्य-संगीत, रचना, शिक्षण और संगीत-संरक्षण में भी योगदान दिया।

हॉर्नब्रुक (2019) ने कर्नाटक संगीत के संदर्भ में लैंगिकता और नए उद्यम का अध्ययन करते हुए प्रवासी महिला संगीतकारों की रुचि का विश्लेषण किया। अध्ययन से संकेत मिलता है कि महिला कला परंपरा को केवल संरक्षित नहीं किया जाता है, बल्कि उसे नए सांस्कृतिक संदर्भों में पुनर्व्याख्यायित भी किया जाता है।

यह तथ्य महत्वपूर्ण है क्योंकि आधुनिक संगीत महिलाएँ पारंपरिक संगीत-व्याकरण को बनाए रखने के लिए मंचीय उपकरण, विषय-वस्तु, सहयोगी और तकनीकी माध्यमों में नए प्रयोग कर रही हैं। इस प्रकार महिला कला कर्नाटक संगीत को स्थिर परंपरा के स्थान पर पर्यावरणीय सांस्कृतिक प्रक्रिया के रूप में स्थापित करने में योगदान देती है।

महिला गायिकाओं का कलात्मक योगदान

महिला गायिकाओं के योगदान को निम्नलिखित आयामों में समझा जा सकता है

योगदान का क्षेत्र	प्रमुख योगदान
गायन शैली	राग-विस्तार, आलाप, तान और भाव-अभिव्यक्ति में नवीनता
परंपरा संरक्षण	गुरु-शिष्य परंपरा और बंदिशों का संरक्षण
शिक्षण	नई पीढ़ी को शास्त्रीय संगीत का प्रशिक्षण
रचनात्मकता	नई बंदिशों, प्रस्तुतियों और प्रयोगों का विकास
सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व	भारतीय संगीत को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंचों तक पहुँचाना
लैंगिक विमर्श	महिलाओं की स्वतंत्र कलात्मक पहचान को स्थापित करना

IJARSCT
ISSN: 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Volume 6, Issue 4, July 2026
Impact Factor: 8.2

डिजिटल प्रसार	रिकॉर्डिंग, ऑनलाइन कक्षाओं और डिजिटल मंचों का उपयोग
सामाजिक परिवर्तन	महिला कलाकारों की पेशेवर स्वायत्तता को बढ़ावा देना

इस प्रकार महिला गायिकाएँ केवल “परंपरा की अनुयायी” नहीं हैं, बल्कि वे परंपरा की पुनर्रचना करने वाली सक्रिय सांस्कृतिक एजेंट भी हैं।

III. आवाज, लैंगिकता और संगीत-सौंदर्य

भारतीय शास्त्रीय संगीत में ध्वनि केवल ध्वनि का माध्यम नहीं है; वह कलाकार की सौंदर्यपरक और सामाजिक पहचान का भी निर्माण करती है। मेडडेगोडा (2014) ने भारतीय संगीत में स्वर संस्कृति का अध्ययन करते हुए शैली, लिंग, प्रदर्शन-संदर्भ और ऐतिहासिक परिदृश्य के बीच संबंध पर विचार किया। इससे स्पष्ट होता है कि "अच्छी आवाज" की धारणा केवल प्राकृतिक स्वर-गुण पर आधारित नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक स्वरों से भी निर्मित है।

अलघबंद-ज़ादेह (2015) का अध्ययन इस चर्चा को आगे बढ़ाता है। उनके अनुसार शास्त्रीय संगीत की कुछ शैलियों, अलंकारों और कामचलाऊ तकनीकों को कला और श्रोतालांगिक अर्थों में ग्रहण किया जाता है। इस प्रकार की महिला इंजीनियर को एक साथ दो आंशिक मूल्यांकित किया जा सकता है, जिसमें एक ओर उसकी संगीत-कुशलता और दूसरी ओर उसकी "स्त्री-सुलभ" या "स्त्री-विरोधी" समझ वाली आवाज और मास्टर्स शामिल हैं।

इस दृष्टि से महिला कलाकारों का योगदान विशेष महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने संगीत में महिला-स्वर की सामाग्री को विस्तृत किया है।

IV. सामाजिक और लैंगिक चुनौतियाँ

महिला कलाकारों की बढ़ती उपस्थिति के बावजूद भारतीय शास्त्रीय संगीत पूरी तरह लैंगिक समानता वाला क्षेत्र नहीं बना है। पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, विवाह और मातृत्व से जुड़ी अपेक्षाएँ, मंचीय अवसरों में असमानता, सामाजिक प्रतिष्ठा की चिंता और पेशेवर नेटवर्क तक सीमित पहुँच जैसी समस्याएँ महिलाओं के संगीत-कैरियर को प्रभावित कर सकती हैं।

2018 में कर्नाटक संगीत और भरतनाट्यम के क्षेत्र विमर्श ने भी यह दिखाया कि महिला कलाकारों और विद्यार्थियों के लिए व्यवसायों और प्रशिक्षण-संस्थानों की सुरक्षा एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। अनेक महिलाओं ने यौन उत्पीड़न और शक्ति-संबंधों से संबंधित अनुभवों को सार्वजनिक किया।

इससे स्पष्ट होता है कि केवल महिलाओं की संख्या बढ़ाना पर्याप्त नहीं है। सुरक्षित, लंबवत और समान अवसर वाला संगीत-संस्थान विकसित करना भी आवश्यक है।

V. आधुनिक तकनीक और महिला गायिकाएँ

रिकॉर्डिंग तकनीक ने भारतीय संगीत में महिला कलाकारों की दृश्यता और श्रव्यता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ट्रम्पर (2018/2020) के अध्ययन में यह तर्क सामने आता है कि प्रारंभिक रिकॉर्डिंग उद्योग ने महिला गायकों को व्यापक श्रोताओं तक पहुँचने और आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के अवसर दिए, हालांकि सामाजिक कलंक पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ।

इक्कीसवीं शताब्दी में यह परिवर्तन डिजिटल प्लेटफॉर्म तक पहुँच गया है। यूट्यूब, ऑनलाइन संगीत समारोह, सोशल मीडिया और डिजिटल शिक्षण ने महिला कलाकारों को पारंपरिक संगीत वाद्ययंत्रों के बाहर भी अपनी पहचान बनाने का अवसर दिया है। इससे कलाकार और श्रोता के बीच संबंध अधिक प्रत्यक्ष हुआ है।

2021 में गायिका विद्या शाह के संदर्भ में प्रकाशित संवाद भी यह बताता है कि महिला कलाकारों की संगीत-भूमिका पर नए सामाजिक और लैंगिक विमर्श विकसित हो रहे हैं। उनकी महिला ऑन रिकॉर्ड जैसे प्रयासों के माध्यम से महिला कलाकारों के योगदान को दस्तावेजीकृत और सार्वजनिक करने का प्रयास उल्लेखनीय है।

VI. महिला गायिकाएँ और सांस्कृतिक संरक्षण

भारतीय शास्त्रीय संगीत मूलतः गुरु-शिष्य और मौखिक परंपरा पर आधारित रहा है। इस संदर्भ में महिला गुरु और शिक्षिकाएँ सांस्कृतिक संरक्षण की महत्वपूर्ण वाहक हैं। वे केवल राग और बंदिश सिखाने का कार्य नहीं करतीं, बल्कि संगीत की सौंदर्य-दृष्टि, अनुशासन, प्रस्तुति-शैली और सांस्कृतिक संदर्भ भी अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करती हैं।

महिला कलाकारों द्वारा परंपरा के संरक्षण का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष दस्तावेजीकरण है। पुरानी बंदिशों, दुर्लभ गायन शैलियों और कलाकारों की स्मृतियों को रिकॉर्ड करना संगीत इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायक है। इस प्रक्रिया में महिला कलाकारों की आवाज को संरक्षित करना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि संगीत इतिहास में महिलाओं का योगदान कई बार पर्याप्त रूप से दर्ज नहीं हुआ।

VII. परंपरा और आधुनिकता का संतुलन

महिला गायकों की आधुनिक भूमिका का एक प्रमुख गुण परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन है। एक ओर वे राग, ताल, घराना, गुरु-शिष्य परंपरा और पारंपरिक बंदिशों को संरक्षित करती हैं; दूसरी ओर नए मंच, नई तकनीक, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और नए श्रोताओं के साथ संवाद करती हैं।

होर्नब्रुक (2019) के अध्ययन में कर्नाटक संगीत की महिला कलाकारों द्वारा पारंपरिक दक्षिण भारतीय संगीत को नए प्रवासी और सांस्कृतिक संदर्भों में रचनात्मक रूप से प्रस्तुत करने की प्रक्रिया दिखाई देती है। यह परिवर्तन बताता है कि महिला कलाकार संगीत परंपरा की निष्क्रिय संरक्षक नहीं बल्कि उसके सक्रिय पुनर्व्याख्याकार हैं।

इस प्रकार भारतीय शास्त्रीय संगीत की समकालीन प्रस्तुतियों में महिला गायकें विभिन्न भाषाओं, संगीत शैलियों और वैश्विक श्रोताओं के साथ संवाद स्थापित कर रही हैं। इससे शास्त्रीय संगीत की पहुंच बढ़ती है और नई पीढ़ी के लिए इसकी प्रासंगिकता बनी रहती है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, July 2026
Impact Factor: 8.2

VIII. समीक्षा से प्राप्त प्रमुख निष्कर्ष

साहित्य समीक्षा से निम्न प्रमुख निष्कर्ष सामने आते हैं

पहला, भारतीय शास्त्रीय संगीत के विकास में महिलाओं की भूमिका ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण रही है, लेकिन पारंपरिक संगीत इतिहास में उसका पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं हुआ।

दूसरा, महिला गायिकाओं ने हिन्दुस्तानी और कर्नाटक दोनों परंपराओं में गायन-शैली, भाव-अभिव्यक्ति और प्रस्तुति की विविधता को बढ़ाया।

तीसरा, महिला कलाकारों ने संगीत को केवल संरक्षित नहीं किया बल्कि व्यक्तिगत रचनात्मकता के माध्यम से उसमें परिवर्तन भी किए।

चौथा, संगीत की आवाज और प्रस्तुति लैंगिक अर्थों से जुड़ सकती है; इसलिए महिला गायकों की कलात्मक पहचान का अध्ययन लिंग अध्ययन के संदर्भ में भी किया जाना चाहिए ।

पाँचवाँ, डिजिटल मीडिया ने महिला कलाकारों की दृश्यता और स्वतंत्र पहचान के लिए नए अवसर प्रदान किए हैं।

छठा, लैंगिक भेदभाव, पेशागत असमानता और सुरक्षा से जुड़े प्रश्न अभी भी महत्वपूर्ण हैं।

सातवाँ, महिला गायिकाओं का योगदान संगीत तक सीमित नहीं है; उन्होंने सांस्कृतिक स्मृति, शिक्षा, सामाजिक पहचान और भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

IX. निष्कर्ष

भारतीय शास्त्रीय संगीत में महिला गायिकाओं का योगदान बहुआयामी, ऐतिहासिक और परिवर्तनकारी है। उन्होंने रागदारी संगीत की परंपरा को आगे बढ़ाने के साथ-साथ गायन की सौंदर्यपरक संभावनाओं को विस्तृत किया। हिन्दुस्तानी संगीत में खयाल, ठुमरी, दादरा और भजन जैसी शैलियों से लेकर कर्नाटक संगीत की कृति, रागालापना और मनोधर्म परंपरा तक महिला कलाकारों की सक्रिय उपस्थिति दिखाई देती है।

2010–2023 के बीच उपलब्ध साहित्य की समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि महिला कलाकारों को अब केवल "महान गायिकाओं" के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय उनकी सामाजिक स्थिति, पेशेवर एजेंसी,रचनात्मकता और लैंगिक अनुभवों के संदर्भ में देखने की आवश्यकता है। लैंगिकता और संगीत-प्रदर्शन के संबंध पर किए गए शोध ने इस दिशा में महत्वपूर्ण सैद्धांतिक आधार प्रदान किया है।

महिला गायिकाओं की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि उन्होंने संगीत के क्षेत्र में अपनी स्वतंत्र आवाज स्थापित की। उन्होंने गुरु-शिष्य परंपरा को आगे बढ़ाया, नई पीढ़ियों को प्रशिक्षित किया, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारतीय संगीत का प्रतिनिधित्व किया और डिजिटल माध्यमों के माध्यम से संगीत की पहुँच का विस्तार किया। अतः भारतीय शास्त्रीय संगीत का समग्र इतिहास महिला कलाकारों के योगदान को केंद्र में रखे बिना पूर्ण नहीं माना जा सकता।

भविष्य के शोध में महिला गायिकाओं की व्यक्तिगत जीवन-कथाओं, घराना-आधारित प्रशिक्षण, डिजिटल संगीत संस्कृति, मंचीय अवसरों, पारिश्रमिक, महिला गुरु-शिष्य संबंधों तथा विभिन्न सामाजिक वर्गों की महिला कलाकारों के तुलनात्मक अध्ययन को

अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। इस प्रकार भारतीय शास्त्रीय संगीत में महिला गायिकाओं का अध्ययन केवल संगीतशास्त्रीय विषय नहीं, बल्कि भारतीय समाज में स्त्री की बदलती सांस्कृतिक स्थिति को समझने का भी महत्वपूर्ण माध्यम है।

संदर्भ सूची

1. अलाघबंद-ज़ादेह, सी. (2015). सोनिक परफ़ॉर्मेटिविटी: उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन संगीत में जेंडर का विश्लेषण। एथनोम्यूज़िकोलॉजी फ़ोरम, 24(3), 349–379.
2. हॉर्नाब्रुक, जे. (2019). लंदन में जेंडर, नई रचनात्मकता और कर्नाटक संगीत। साउथ एशियन डायस्पोरा, 11(2), 193–208.
3. मेद्देगोडा, सी. पी. (2014). हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में आवाज़ की संस्कृतियाँ। UPM बुक सीरीज़ ऑन म्यूज़िक रिसर्च, नंबर 6.
4. सुब्रमण्यम, एल. (2018). सॉन्ग संग टू: परफॉर्मिंग द नेशन। साउथ एशियन हिस्ट्री एंड कल्चर, 9(4), 396–406.
5. ट्रम्पर, एम. एफ. (2018). हिंदुस्तानी गायन संगीत और भारतीय संगीत में महिलाओं की भूमिका पर साउंड टेक्नोलॉजी के आगमन का प्रभाव। रिसर्च प्रेजेंटेशन/सामग्री।
6. अशफ़ाक, आर., और रोहित। (2021). हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में महिलाओं की भागीदारी - विशेष रूप से तबला वादन के संदर्भ में। स्वर सिंधु, 9(2), 95–107.

ISSN 2581-9429 IJARSCT